दृष्टि The Vision

EPFO

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन

नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित
आगामी ई.पी.एफ.ओ. परीक्षा हेतु उपयोगी

- औद्योगिक संबंध और श्रम कानून
- सामान्य लेखांकन सिद्धांत
- सामान्य अंग्रेज़ी
- संख्यात्मक अभियोग्यता
- सामान्य मानसिक योग्यता
- सामान्य विज्ञान एवं कंप्यूटर
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
- भारतीय राजव्यवस्था
- भारतीय अर्थव्यवस्था एवं विकास संबंधी मुद्दे
- भारत में सामाजिक सुरक्षा

विगत 2 वर्षों के हल प्रश्नपत्र सहित

दृष्टि लर्निंग ऐप पर उपलब्ध प्रमुख कोर्सेज़

IAS Foundation Course

सामान्य अध्ययन

प्रिलिम्स + मेन्स

- 1200+ घंटों की 500+ कक्षाएँ
- सभी टॉपिक के लिये प्रिंटेड नोट्स
- 3 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

IAS Foundation Course

General Studies

Prelims + Mains

- 400+ Classes of 1000+ hrs.
- Printed Notes of All Segments
- Other special facilities for 3 years

IAS Prelims Course

सामान्य अध्ययन

केवल प्रिलिम्स

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'क्विक बुक सीरीज़' की 9 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

IAS + UPPCS + BPSC Optional Subject

हिंदी साहित्य

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- 400+ घंटों की कक्षाएँ
- पाठ्यक्रम में शामिल सभी पाठ्य-पुस्तकें तथा प्रिंटेड नोट्स
- 145 दैनिक अभ्यास प्रश्न और 18 टेस्ट पेपर (मॉडल उत्तर सहित)

BPSC Prelims Course

बिहार PCS

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'BPSC सीरीज़' की 8 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

RAS/RTS Prelims Course

राजस्थान PCS

- 500+ घंटों की कक्षाएँ
- 'RAS सीरीज़' की 8 पुस्तकें
- 2 वर्षों के लिये अन्य विशेष सुविधाएँ

एथिक्स (पेपर-4)

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- कुल 70 कक्षाएँ
- IAS के साथ-साथ UPPCS के लिये पूर्णतः सटीक
- मूल्यांकन की सुविधा के साथ 6 टेस्ट

निबंध

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

- कुल 13 कक्षाएँ
- IAS के साथ-साथ PCS के लिये पूर्णतः सटीक
- मूल्यांकन की सुविधा के साथ 20 टेस्ट

अतिरिक्त जानकारी के लिये 9311406442 नंबर पर कॉल या वाट्सएप करें

विज़िट करें www.drishtiIAS.com

अपने फोन पर इंस्टॉल करें Drishti Learning App

EPFO

(कर्मचारी भविष्य निधि संगठन)

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित
आगामी ई.पी.एफ.ओ. परीक्षा हेतु उपयोगी

दृष्टि पब्लिकेशन्स
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
Website: www.drishtiias.com
E-mail : booksteam@groupdrishti.com

शीर्षक : ***EPFO (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन)***

लेखक : ***टीम दृष्टि***

प्रथम संस्करण : **अप्रैल 2021**

मूल्य : **₹ 330**

ISBN : **978-93-90955-64-0**

प्रकाशक

VDK Publications Pvt. Ltd.

(दृष्टि पब्लिकेशन्स)

641, प्रथम तल,

डॉ. मुखर्जी नगर,

दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

✸ इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।

✸ हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।

✸ सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।

✸ **© कॉपीराइट :** दृष्टि पब्लिकेशन्स (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

✸ एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

दो शब्द

प्रिय पाठको,

'दृष्टि पब्लिकेशन्स' की अभिनव पुस्तक 'EPFO' को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है। आप जानते ही हैं कि 'दृष्टि पब्लिकेशन्स' IAS और PCS की परीक्षा पर केंद्रित अनेक पुस्तकों का प्रकाशन करता रहा है, जिन्हें आप परीक्षार्थियों द्वारा काफी सराहा जाता रहा है। पिछले कुछ महीनों से परीक्षार्थियों द्वारा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित EPFO की परीक्षा पर आधारित पाठ्य पुस्तक की मांग हमसे निरंतर की जा रही थी। अत: परीक्षार्थियों द्वारा की गई इसी मांग पर हमने EPFO परीक्षा पर केंद्रित एक संपूर्ण पुस्तक को प्रकाशित करने का निर्णय लिया। आप जानते ही हैं कि किसी भी परीक्षा में सफल होने की पहली सीढ़ी यह है कि आपके पास परीक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एक संक्षिप्त और सारगर्भित अध्ययन सामग्री हो। इसी को ध्यान में रखकर हमने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को संबोधित करते हुए यह पुस्तक तैयार की है।

पुस्तक निर्माण से पूर्व हमने बाज़ार में कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) परीक्षा से संबंधित अनेक पुस्तकों का अवलोकन किया किंतु उनमें से एक भी पुस्तक ऐसी न थी जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कवर किया गया हो, साथ ही उनका कंटेंट भी स्तरहीन एवं त्रुटिपूर्ण था। अत: हमारी सबसे बड़ी चुनौती थी EPFO के विस्तृत पाठ्यक्रम को एक सूत्र में पिरोकर संक्षिप्त एवं त्रुटिरहित सामग्री प्रदान करना। इसके लिये हमने लगभग 10 सदस्यों की एक टीम बनाई जिन्होंने अपनी विशेषज्ञता के अनुसार पुस्तक के विभिन्न खंडों पर अपना लेखन कार्य पूर्ण किया; तत्पश्चात् 5 वरिष्ठ सदस्यों की एक और टीम बनाई गई जिन्होंने पूरे कंटेंट का सूक्ष्म निरीक्षण किया ताकि कोई त्रुटि न रह जाए।

प्रस्तुत पुस्तक में EPFO के पाठ्यक्रम में वर्णित सामान्य अध्ययन संबंधी विषयों, जैसे- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय राजव्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था, सामान्य विज्ञान तथा कंप्यूटर पर संक्षिप्त एवं सारगर्भित सामग्री दी गई है। साथ ही औद्योगिक संबंध, श्रम कानून और सामाजिक सुरक्षा तथा सामान्य लेखांकन सिद्धांत पर पर्याप्त अध्ययन सामग्री प्रदान की गई है। यही नहीं, इस पुस्तक में सामान्य अंग्रेज़ी, संख्यात्मक अभियोग्यता तथा सामान्य मानसिक योग्यता से संबंधित पाठ भी शामिल किये गए हैं। आप परीक्षा के ट्रेंड को समझ सकें तथा पुस्तक का अधिकाधिक लाभ उठा सकें इसके लिये हमने पूर्व में संपन्न हुई (2015 तथा 2017) परीक्षाओं के हल प्रश्नपत्र भी इस पुस्तक में दिये हैं। हालाँकि, करेंट अफेयर्स से संबंधित अध्ययन सामग्री को हमने पुस्तक में जगह नहीं दी है क्योंकि लगभग 450 पृष्ठों की पुस्तक में पूरे पाठ्यक्रम के साथ समसामयिकी को भी समेटना संभव न था। समसामयिक मुद्दों को समग्रता में तैयार करने के लिये आप हमारी करेंट अफेयर्स से संबंधित पुस्तकों जैसे 'वार्षिकी 2021' तथा हमारी मासिक मैगज़ीन 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' का सहारा ले सकते हैं।

अब पुस्तक आपके समक्ष उपस्थित है। इसे पढ़कर अब आप ही तय करेंगे कि यह आपकी अपेक्षाओं पर कितनी खरी उतरी, हालाँकि हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपकी तैयारी और सफलता में उपयोगी सिद्ध होगी। वैसे तो पुस्तक को तैयार करने में पूरी सतर्कता बरती गई है तथा पुस्तक की कई चरणों में सूक्ष्मता से जाँच की गई है, लेकिन यह दावा नहीं किया जा सकता कि यह पुस्तक शत-प्रतिशत दोषरहित है। इसमें कुछ कमियों का रह जाना स्वाभाविक है। अत: आप इस पुस्तक को पाठक के साथ-साथ आलोचक की निगाह से भी पढ़ें। अगर आपको इसमें कोई कमी दिखे तो आप अपने सुझाव बेझिझक हमें **'8130392355'** नंबर पर वाट्सएप मैसेज से भेज सकते हैं। आपके सुझावों के आधार पर हम पुस्तक के आगामी संस्करणों को और बेहतर बना सकेंगे।

साभार,

प्रधान संपादक

दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

1. औद्योगिक संबंध, श्रम कानून और सामाजिक सुरक्षा 1-39
2. सामान्य लेखांकन सिद्धांत 40-60
3. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन 61-97
4. भारतीय राजव्यवस्था एवं कल्याणकारी योजनाएँ 98-157
5. भारतीय अर्थव्यवस्था 158-190
6. सामान्य विज्ञान एवं कंप्यूटर 191-298
7. सामान्य अंग्रेज़ी 299-322
8. संख्यात्मक अभियोग्यता 323-382
9. सामान्य मानसिक योग्यता 383-423
10. विगत वर्षों के प्रश्नपत्र 424-443

1 औद्योगिक संबंध, श्रम कानून और सामाजिक सुरक्षा (Industrial Relations, Labour Laws and Social Security)

औद्योगिक संबंध (Industrial Relations)

औद्योगिक संबंध को विशेषकर श्रम और प्रबंधन के बीच, उनके समग्र दृष्टिकोण तथा उद्योग संबंधित मामलों के प्रबंधन से संबंधित दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप उद्योगों में विकसित संबंध तथा अंत: क्रियाएँ आदि, जो न केवल श्रमिकों और प्रबंधन की उन्नति बल्कि उद्योग और समस्त अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिये भी आवश्यक हैं, के द्वारा परिभाषित किया जाता है।

औद्योगिक संबंध का आधुनिक दृष्टिकोण न केवल श्रमिकों-श्रमिकों, श्रमिकों-नियोक्ताओं और नियोक्ताओं-नियोक्ताओं के बीच के संबंध, बल्कि इन संबंधों में शामिल विभिन्न प्रक्रियाएँ, जैसे-विवाद-निपटारा, निर्णय-निर्माण में भागीदारी, सामूहिक सौदेबाज़ी आदि को भी अपने अंदर समाहित करता है।

औद्योगिक संबंध के उद्देश्य

- औद्योगिक संघर्ष को कम करना तथा सहयोग को बढ़ावा देना।
- नियोक्ताओं तथा कर्मचारियों के बीच स्वस्थ संबंध स्थापित करना।
- अनिश्चितताओं को कम करके निरंतर उत्पादन बनाए रखना तथा उत्पादकता को बढ़ाना।
- श्रमिकों को प्रबंधन और निर्णय निमार्ण की प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर प्रदान करना।
- औद्योगिक शांति और सामंजस्य बनाए रखना।
- संतुष्ट, प्रतिबद्ध और शिक्षित कार्यबल तैयार करना।
- अनुचित श्रम प्रथाओं का उन्मूलन करना।
- कर्मचारियों/ श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना।
- श्रमिकों और प्रबंधन दोनों के हितों की रक्षा करना।

औद्योगिक संबंध के कार्यक्षेत्र

- प्रबंधन और कर्मचारियों/श्रमिकों के बीच का संबंध।
- प्रबंधन और व्यापार संघ के बीच का संबंध।
- विभिन्न पक्षों (नियोक्ता, कर्मचारी और राज्य) की भूमिका (अधिकार, कर्त्तव्य आदि)।
- नियोक्ताओं तथा कर्मचारियों के बीच उत्पन्न टकराव से निपटने का तंत्र।

औद्योगिक संबंधों के प्रकार

औद्योगिक संबंधों में निम्नलिखित चार प्रकार के संबंध शामिल हैं–

- **श्रम संबंध (Labour Relations):** व्यापार संघ और प्रबंधन के बीच का संबंध, जिसे श्रम-प्रबंधन संबंध भी कहा जाता है।
- **समूह संबंध (Group Relations):** कर्मचारियों के विभिन्न समूह, जैसे-श्रमिक, पर्यवेक्षक, तकनीशियन आदि के बीच का संबंध।
- **नियोक्ता-कर्मचारी संबंध (Employer-Employee Relations):** कर्मचारियों और नियोक्ताओं/प्रबंधन के बीच का संबंध।
- **सामुदायिक या सार्वजनिक संबंध (Community or Public Relations):** उद्योग और समाज के बीच का संबंध।

औद्योगिक संबंध और भारतीय संविधान

मौलिक अधिकार

- **अनुच्छेद-16:** यह अनुच्छेद राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिये अवसर की समता प्रदान करता है तथा किसी भी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, वंशक्रम, जन्मस्थान, निवास या इनमें से किसी के आधार पर विभेद करने से रोकता है।
- **अनुच्छेद-19:** इस अनुच्छेद के खंड 1 का उपखंड (ग) सभी नागरिकों को संगम या संघ बनाने का तथा उपखंड (छ) कोई भी वृत्ति, उपजीविका, व्यवसाय या व्यापार करने का अधिकार देता है।
- **अनुच्छेद-23:** यह अनुच्छेद मानव तस्करी, बेगारी और बलात् श्रम को प्रतिषिद्ध करता है और इस उपबंध के उल्लंघन को दंडनीय अपराध घोषित करता है।
- **अनुच्छेद-24:** इस अनुच्छेद के अनुसार, चौदह वर्ष से कम आयु के किसी बच्चे को किसी कारखाने या खान या किसी अन्य परिसंकटमय नियोजन में काम करने के लिये नियोजित नहीं किया जा सकता।

राज्य की नीति निदेशक तत्त्व

- **अनुच्छेद-38:** इस अनुच्छेद के अनुसार राज्य न केवल व्यक्तियों के बीच बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले तथा विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोगों के समूहों के बीच प्रतिष्ठा, सुविधाओं और अवसरों की असमानता समाप्त करने तथा आय की असमानता को कम करने का प्रयास करेगा।
- **अनुच्छेद-39:** इस अनुच्छेद के अनुसार राज्य अपनी नीति का इस प्रकार संचालन करेगा ताकि–
  - पुरुष और स्त्री सभी नागरिकों को समान रूप से जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो;
  - समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बँटा हो जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो;
  - आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले जिससे धन और उत्पादन के साधनों का सर्वसाधारण के लिये अहितकारी संकेन्द्रण न हो;

2 सामान्य लेखांकन सिद्धांत (General Accounting Principles)

लेखांकन का परिचय (Introduction of Accounting)

आधुनिक पुस्तपालन (Book-keeping) प्रणाली का जन्मदाता इटली के प्रसिद्ध गणितज्ञ और दर्शनशास्त्री 'लूकस पेसिओली (Luca Pacioli) को माना जाता है। इनकी पुस्तक **'डी कम्प्यूटिसेट एट स्क्रिप्चरिस'** (DeComputis et Scrpturis) नाम से वेनिस नगर में 1494 ई. में प्रकाशित हुई जिसमें पुस्तपालन प्रणाली के सिद्धांतों और नियमों का वर्णन मिलता है। 1543 ई. में **'ह्यूग ओल्ड कैसिल'** के द्वारा इस पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद किया गया। **'पुस्तपालन (Book-keeping)'** शब्द की रचना 'पुस्तक (Book)' तथा 'पालन (Keeping)' के योग से हुई है। 'पुस्तक (Book)' का अर्थ है बही तथा 'पालन (Keeping)' का अर्थ है नियमानुसार पालन करना या संयोजित तरीके से रखना। बुक कीपिंग एक ऐसी पद्धति है, जिसमें एक कंपनी, गैर-लाभकारी संगठन, व्यक्तिगत, आदि के लिये वित्तीय लेन-देन के भंडारण, रिकार्डिंग, नियमानुसार रखना, प्रविष्टि करना, व्याख्या करना, की प्रक्रिया को शामिल किया जाता है। बुक कीपिंग में व्यवसाय से संबंधित लेन-देन का विवरण तथा सूचना का निष्पादन सटीकता से प्रतिदिन किया जाता है। बुक कीपिंग में सामान्यत: रसीद, खाता धारक को बेचा गया माल, क्रय किया गया माल तथा भुगतान की गई राशि से संबंधित विवरण होते हैं।

यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जो लेखांकन से संबंधित विशिष्ट क्रिया होती है। जिसका कार्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक लेन-देन चाहे वह बिक्री या खरीद है, दर्ज किया जाना चाहिये।

पुस्तपालन की परिभाषाएँ

पुस्तपालन को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया जाता है-

"पुस्तपालन व्यापारिक लेन-देनों को बहियों के समूह में लिखने की कला है।" *-जे.आर. बाटलीबॉय*

"पुस्तपालन व्यावसायिक लेन-देनों को सुव्यवस्थित ढंग से लिखने की कला है।" *-ए.एच. रोसेनकैम्फ*

पुस्तपालन की विशेषताएँ

1. पुस्तपालन विज्ञान माना जाता है क्योंकि यह एक क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान को दर्शाता है।
2. पुस्तपालन कला माना जाता है क्योंकि यह एक ऐसी व्यवस्था से संबंधित है, जिसकी प्रथाओं के अनुसार लेन-देन को रिकॉर्ड करने का कार्य किया जाता है।
3. पुस्तपालन की प्रारंभिक इकाई रोज़नामचा प्रविष्टि है।
4. पुस्तपालन की बहियों की प्रकृति तथा संख्या व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करती है।
5. पुस्तपालन में आर्थिक लेन-देन किसी विशेष समय या अवधि से संबंधित होते हैं।
6. व्यावसायिक लेन-देनों के आर्थिक परिणामों को पुस्तपालन की बहियों से जाना जा सकता है; जैसे- क्रय, विक्रय नकद संपत्तियाँ।

लेखांकन सूचनाओं का उपयोग

लेखांकन सूचनाएँ सभी सम्बद्ध पक्षों को सम्प्रेषित की जा सकती हैं। लेखांकन सूचनाओं का प्रयोग निम्नलिखित तरीके से कर सकते हैं-

1. व्यापारिक उपलब्धियों का मापन करना।
2. लेखांकन नियंत्रण।
3. तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. भविष्य की योजना बनाना।
5. वैधानिक अध्ययन के स्वरूप का निर्धारण करना।
6. व्यापारिक निर्णय लेना।
7. योजनाओं का निर्धारण करना।

लेखांकन सूचनाओं के उपयोगकर्त्ता

व्यापार का स्वरूप चाहे बड़ा हो या छोटा उसकी मूल भाषा लेखांकन होती है। जिसके आधार पर उपयोगकर्त्ता व्यापार से संबंधित उचित निर्णय लेते हैं।

1. **व्यापार का स्वामी (The Proprietor of Business):** व्यापार का स्वामी जब अपने व्यापार में पूंजी लगाता है तो उसका मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभार्जन करना होता है। वह लेखांकन का प्रयोग करके जान सकता है कि व्यापार किस दिशा में जा रहा है? कितना लाभ हुआ और व्यापार की स्थिति क्या है?
2. **प्रबंधक (Manager):** व्यापार में भविष्य की योजना तथा व्यावसायिक कार्यकलाप का मूल्यांकन लेखांकन के माध्यम से प्रबंधक द्वारा किया जाता है।
3. **कर्मचारी (Employees):** लेखांकन के माध्यम से कर्मचारी अपने बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है कि उनका हित कहाँ तक सुरक्षित है।
4. **लेनदार (Creditors):** उधार माल बेचने वाले तथा उधार सेवाएँ देने वाले यह जान सकते हैं कि व्यापार में कितना धन उधार तथा ऋण का विनियोग किया जा सकता है।
5. **सरकार (Government):** सरकार लेखांकन सूचनाओं के माध्यम से समाज के निम्न वर्गों के लिये योजना का निर्धारण कर सकती है। लेखांकन के माध्यम से सरकार भविष्य की योजनाओं का क्रियान्वयन करती है।
6. **निवेशक (Investors):** निवेशक लेखांकन सूचनाओं के माध्यम से यह जान सकता है कि किस व्यापार में कितना निवेश करना है? कौन-सा निवेश उसके लिये हितकारी सिद्ध हो सकता है?

समस्त रणनीति तैयार करने में अहम भूमिका निभाता है, तथा जिसका व्यापार के लाभ पर स्वामित्व होता है और जो हानि का वहन करता है, व्यापार का स्वामी कहलाता है। एकाकी व्यापार में एक व्यक्ति, साझेदारी फर्म में सभी साझेदार और संयुक्त पूंजी कंपनी में सभी हिस्सेदार स्वामी कहलाते हैं।

- **चल या चालू संपत्तियाँ (Current or Floating Assets): हावार्ड और अप्टन के अनुसार**-सामान्य रूप से चालू संपत्तियों का अभिप्राय उन संपत्तियों से होता है जो कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के द्वारा अल्पकाल प्राय: एक वर्ष के अन्तर्गत रोकड़ में परिवर्तित हों। जैसे- देनदार, व्यापारिक रहतिया आदि। अस्थायी संपत्तियों में तरल संपत्तियाँ (Liquid Assets) शामिल होती हैं।
- **मूर्त संपत्तियाँ (Tangible Assets):** वे संपत्तियाँ जिनको हम देख तथा स्पर्श कर सकते हैं, मूर्त संपत्तियाँ कहलाती हैं। जैसे- भूमि, भवन, मशीनरी आदि।
- **अमूर्त संपत्तियाँ (Intangible Assets):** वे संपत्तियाँ जिन्हें भौतिक रूप से देखा व स्पर्श नहीं किया जा सकता, अमूर्त संपत्तियाँ कहलाती हैं, जैसे-ख्याति, व्यापारिक चिह्न।
- **दायित्व (Liabilities):** कोई व्यक्ति व्यापार के लिये धनराशि लेता है, जो उसको बाद में चुकाना पड़े, दायित्व कहलाता है।
- **दीर्घकालीन दायित्व (Long Term Liabilities):** सामान्य रूप से एक वर्ष की अवधि के बाद देय दायित्व दीर्घकालीन दायित्व कहलाते हैं, जैसे- बॉण्ड, वित्तीय संस्था से लिया गया अवधि ऋण।
- **पूंजीगत प्राप्तियाँ (Capital Receipts):** पूंजीगत प्राप्तियाँ एक प्रकार की राशि है, जो व्यापार के लिये दूसरों के द्वारा प्रदान की जाती है और ऋण के योगदान का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक निश्चित परिसंपत्ति के बिक्री मूल्य का प्रतिनिधित्व भी करती है।
- **राजस्व प्राप्तियाँ (Revenue Receipt):** कोई भी आय जो माल की बिक्री पर आय, निवेश पर ब्याज, कमीशन, किराया के रूप में प्राप्त होती है, राजस्व प्राप्तियाँ कहलाती है।
- **स्थगित आयगत व्यय (Deferred Revenue Expenditure):** वह आयगत व्यय जिस पर लाभ व्यापार को वर्तमान वर्ष में होने के साथ-साथ भविष्य भी प्राप्त होता है, स्थगित आयगत व्यय कहलाता है। जैसे-विज्ञापन, प्रारंभिक व्यय आदि।
- **क्रय वापसी (Purchase Return):** क्रय किये माल में कुछ माल किसी कारणवश वापस कर दिया जाना क्रय वापसी कहलाता है।
- **विक्रय वापसी (Sales Return):** व्यापार का माल जब ग्राहकों के द्वारा विक्रेता को वापस कर दिया जाता है, तो उसे विक्रय वापसी कहते हैं।
- **रहतिया (Stock):** किसी अवधि के अन्त में अविक्रित मदों, अर्द्ध-निर्मित मदों आदि का मूल्य रहतिया कहा जाता है।
- **आधारभूत प्रलेख (Voucher Documents):** व्यापार की बाह्य आर्थिक क्रियाओं से संबंधित लिखित प्रलेख को आधारभूत प्रलेख कहते हैं।
- **व्यापारिक छूट (Trade Discount):** जब विक्रेता के द्वारा स्वत: क्रेता को क्रय मूल्य पर कुछ कटौती दी जाती है, तो व्यापारिक छूट कहलाती है।
- **नकद छूट (Cash Discount):** विक्रेता के द्वारा क्रेता को नकद बिक्री के समय या एक निश्चित समय के अन्दर भुगतान करने पर दी जाने वाली निश्चित छूट नकद छूट कहलाती है।
- **ऋणी या देनदार (Debtors):** व्यापार की रकम जिस व्यक्ति या संस्था के पास बकाया होती है, उसे ऋणी कहते हैं।
- **लेनदार (Creditors):** व्यापार के ऊपर व्यक्ति या संस्था जिसका बकाया होता है, उसे लेनदार कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. पुस्तपालन संबंधित प्रथम पुस्तक कब प्रकाशित हुई थी?
   (a) 1586 (b) 1484
   (c) 1494 (d) 1530
2. कार्यालय भवन का भाड़ा ₹5000 दिया। यह है-
   (a) घटना (b) लेन-देन
   (c) दोनों (d) कोई नहीं
3. वित्तीय वर्ष के अन्त में ₹100000 मूल्य का माल बेचने पर ₹2000 का अंतिम रहतिया था। यह है-
   (a) एक घटना (b) एक लेन-देन
   (c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं
4. स्वामिगत कोष के अलावा संस्था के दायित्वों को कहा जाता है।
   (a) संपति
   (b) दायित्व
   (c) पूंजी
   (d) इनमें से कोई नहीं
5. वित्तीय विवरणों में पैसे को छोड़ देना और पूर्णांक में दिखाना आधारित है-
   (a) रूढ़िवादिता अवधारणा (b) निरंतरता अवधारणा
   (c) सारता अवधारणा (d) वसूली अवधारणा
6. निम्नलिखित अवधारणा के अनुसार स्थायी संपत्तियों और चालू संपत्तियों को वर्गीकृत किया जाता है-
   (a) पृथक इकाई (b) चालू व्यापार
   (c) निरंतरता (d) समय अवधि
7. किस अवधारणा के अनुसार संस्था के स्वामी को आहरण पर ब्याज दिया जाता है?
   (a) उपार्जन अवधारणा (b) रूढ़िवादिता अवधारणा
   (c) इकाई अवधारणा (d) द्विपक्षीय अवधारणा
8. यह विचार कि स्वामी व्यापार से पृथक है..... अवधारणा पर आधारित है-
   (a) द्विपक्षीय (b) पृथक इकाई
   (c) वसूली (d) सारता

9. लागत मूल्य पर स्थायी संपत्तियों का अभिलेखन पालन करने का विश्वास दिलाता है–
(a) रूढ़िवादिता (b) लागत अवधारणा
(c) चालू व्यापार अवधारणा (d) उपार्जन अवधारणा

10. व्यक्ति जिसे फर्म को धन देना है कहलाता है–
(a) लेनदार (b) देनदार
(c) आपूर्तिकर्त्ता (d) क्रेता

11. निम्नलिखित में चालू दायित्व है–
(a) 12% ऋणपत्र (b) अंश पूंजी
(c) आधिक्य (d) लेनदार

12. इनमें से कौन-सी काल्पनिक संपत्ति है?
(a) भूमि (b) भवन
(c) ख्याति (d) प्रारम्भिक व्यय

13. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थायी संपत्ति में सम्मिलित होता है–
(a) अंतिम रहतिया (b) अग्रिम भुगतान
(c) फर्नीचर (d) देनदार

14. संयुक्त पूंजी कम्पनी में व्यापार का स्वामी होता है–
(a) एक व्यक्ति (b) साझेदार
(c) अंशधारी (d) प्रबंधन

15. इनमें से कौन-सा स्थायी सम्पत्ति नहीं है?
(a) भूमि (b) ख्याति
(c) संयंत्र (d) बैंक में रोकड़

16. साझेदारी फर्म में स्वामी होता/होते है/हैं–
(a) एक व्यक्ति (b) सभी साझेदार
(c) प्रबंधन (d) अंशधारी

17. व्यय जिसका लाभ व्यापार के वर्तमान वर्ष में प्राप्त होने के साथ-साथ भविष्य में भी प्राप्त होता है, कहलाता है–
(a) चालू व्यय (b) पूंजीगत व्यय
(c) पूर्ण व्यय (d) सतत व्यय

18. भारतीय वस्तु विक्रय अधिनियम, 1930 की धारा 2(8) के अनुसार, एक व्यक्ति उस समय दिवालिया घोषित कर दिया जाता है जब–
(a) वह व्यवसाय की सामान्य प्राप्ति में अपने ऋण के भुगतान में असमर्थ होता है।
(b) व्यक्ति की संपत्तियाँ दायित्व से बहुत अधिक होती हैं।
(c) वह व्यवसाय को सामान्य रूप से चला पाने में असमर्थ है।
(d) उसे पिछले वित्तीय वर्ष में 50 प्रतिशत से अधिक की हानि हो रही हो।

19. किसी भी व्यवहार के तुरंत बाद उक्त व्यवहार को जिस बही से लिखा जाता है, उसे कहते हैं–
(a) अल्पकालीन बही (b) रद्दी बही
(c) रद्दी लेखा (d) अल्पावधि लेखा

20. लेखांकन की भाषा है–
(a) वस्तु मात्रक (b) मुद्रा मात्रक
(c) उत्पादन मात्रक (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. एक चार्टर्ड लेखापाल जो शुल्क के बदले में लेखांकन की सेवा प्रदान करता है, कहलाता है–
(a) सार्वजनिक लेखापाल (b) निजी लेखापाल
(c) आंतरिक लेखापाल (d) सरकारी लेखापाल

22. लेखांकन सूचनाओं का उपयोगकर्त्ता नहीं है–
(a) ऋणदाता (b) अवयस्क
(c) निवेशक (d) स्वामी

23. प्रबंधन लेखांकन है–
(a) लेन-देन से संबंधित प्रबंध की एक अभिलेखन तकनीक
(b) एक लिपिकीय कार्य
(c) व्यवसाय की पूर्व क्रियाओं का विश्लेषण
(d) भविष्य के लिये लेखांकन

24. पुस्तपालन की दोहरा लेखा प्रणाली के आविष्कारक हैं–
(a) पिकिल्स (b) लूकस पेसिओली
(c) बाटलीबॉय (d) कार्टर

उत्तरमाला

1.(c)	2. (b)	3. (a)	4. (b)	5. (c)	6. (d)	7. (c)	8. (b)	9. (b)	10. (b)
11.(d)	12. (c)	13. (c)	14. (c)	15. (d)	16. (b)	17. (b)	18. (a)	19. (b)	20. (b)
21.(a)	22. (b)	23. (a)	24. (b)						

लेखांकन का सैद्धांतिक आधार (Theory Base of Accounting)

लेखांकन का कई शताब्दियों में अभूतपूर्व विकास हुआ है। प्रथम चरण में लेन-देन से लेकर रोज़नामचा प्रवृष्टि, व्यापारिक खाता, लाभ हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा बनाने के लिये निश्चित सिद्धांत का पालन किया जाता है।

लेखांकन के कार्य तथा व्यवहार में मार्गदर्शन प्रदान करने वाली संकल्पनाएँ और आधारभूत सिद्धांत ही लेखांकन सर्वमान्य सिद्धांत कहलाते हैं।

लेखांकन सिद्धांत का अर्थ

अमेरिका के प्रमाणित लोक लेखपालों की संस्था के अनुसार, "लेखांकन सिद्धांत एक सामान्य नियम या कार्य के दिशानिर्देश हेतु बनाए

12. लेखांकन मानक का उद्देश्य है:
(a) विवादित लेखा व्यवहारों को विवादहीन लेख व्यवहार में बदलना
(b) व्यावसायिक वातावरण के अनुरूप लेखा प्रविधियों को सरल बनाना
(c) वित्तीय विवरणों को सहजता देना
(d) उपर्युक्त सभी

13. कोई विशेष लेखांकन किस तिथि पर तथा किस प्रकार की संस्था पर लागू होगा, तया किया जाता है:
(a) इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा
(b) व्यवसाय द्वारा
(c) संस्था द्वारा
(d) इनमें से कोई नहीं

14. लेखांकन मानक के लाभ हैं-
(a) लेखा व्यवहारों के विवाद को नियंत्रित करना
(b) लेखांकन में लोचशीलता लाना
(c) वित्तीय विवरणों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता में सुधार लाना
(d) उपर्युक्त सभी

15. विश्व स्तर पर लेखांकन मानकों को बनाने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक समिति की स्थापना हुई–
(a) 1973 में
(b) 1942 में
(c) 1992 में
(d) 1987 में

16. लेखांकन मानक की विषय वस्तु नहीं है–
(a) प्रयुक्त शब्दावलियों का तर्कसंगत ओर अर्थपूर्ण प्रयोग
(b) लेखांकन के नियमों, नीतियों आदि में एकरूपता
(c) वित्तीय विवरणों के प्रस्तुतीकरण में एकरूपता लाना
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1.(a)	2. (b)	3. (a)	4. (c)	5. (d)	6. (c)	7. (d)	8. (a)	9. (c)	10. (b)
11.(a)	12. (d)	13. (a)	14. (d)	15. (a)	16. (d)				

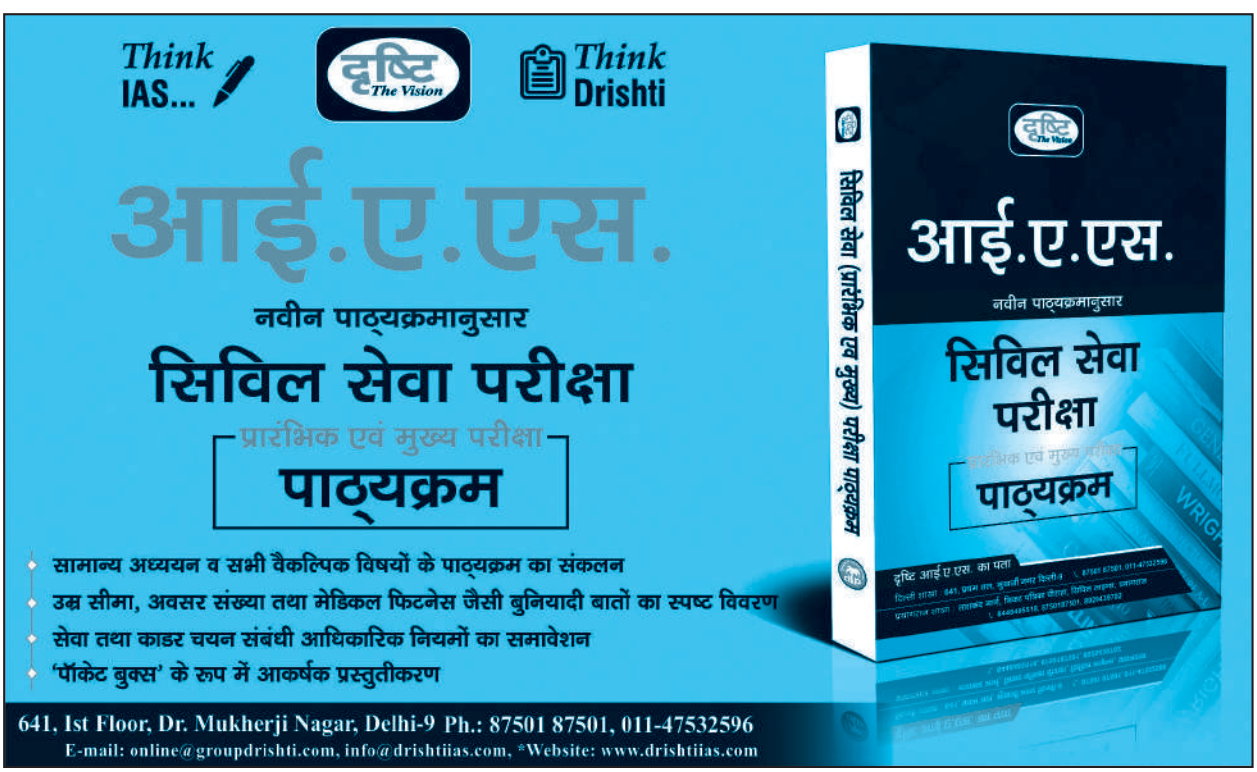

3 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (Indian Freedom Struggle)

यूरोपीय कंपनियों के बीच संघर्ष

आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष

भारत आने वाली यूरोपीय कंपनियों में पुर्तगाली व डच कंपनियाँ जहाँ व्यापारिक व राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में पहले ही परास्त हो गईं वहीं डेनिस कंपनी 1745 तक अपनी सारी संपत्ति ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बेचकर भारत से चली गई। अब ब्रिटिश और फ्रेंच कंपनियाँ ही भारत में प्रमुख व्यापारिक कंपनियाँ थीं जिनके पास पर्याप्त व्यापारिक एकाधिकार थे। अत: दोनों कंपनियों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा और राजनीतिक संघर्ष होना स्वाभाविक था। इन प्रतिस्पर्द्धाओं के चलते दोनों कंपनियों के मध्य तीन युद्ध हुए, जिन्हें 'कर्नाटक युद्ध' के नाम से जाना जाता है। इस आंग्ल-फ्राँसीसी संघर्ष में अंतत: अंग्रेज़ों को सफलता प्राप्त हुई।

प्रथम कर्नाटक युद्ध *(1746–1748)*

- इस युद्ध को 'सेंट टोमे' का युद्ध भी कहा जाता है।
- इस युद्ध की पृष्ठभूमि यूरोप में दोनों शक्तियों (फ्राँस एवं ब्रिटेन) के मध्य लड़े गए ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध से ही तैयार हो गई थी। यूरोप में फ्राँस और ब्रिटेन एक-दूसरे के विरोधी थे, जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ा।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण एक अंग्रेज़ अधिकारी कैप्टन बार्नेट द्वारा कुछ फ्राँसीसी जहाज़ों पर कब्ज़ा कर लेना था।
- डूप्ले ने मॉरीशस के फ्राँसीसी गवर्नर ला बूर्डोने की सहायता से मद्रास को जीत लिया। अंग्रेज़ों ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन से डूप्ले के विरुद्ध सहायता मांगी। हालाँकि हस्तक्षेप के बाद भी डूप्ले ने मद्रास घेरा नहीं छोड़ा।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध फ्राँसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के मध्य लड़ा गया। इस युद्ध में फ्राँसीसी विजयी रहे। यह किसी विदेशी सेना की पहली विजय मानी जाती है। इस विजय का मुख्य कारण फ्राँसीसियों का तोपखाना था।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध का अंत 1748 में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हुई 'एक्स-ला-शैपेल' की संधि (1748) से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार मद्रास अंग्रेज़ों को तथा अमेरिका में लुईवर्ग फ्राँसीसियों को वापस मिल गया। इस तरह, युद्ध के प्रथम दौर में दोनों दल बराबर रहे।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध का कोई तात्कालिक राजनीतिक प्रभाव भारत पर नहीं पड़ा। न तो इस युद्ध से फ्राँसीसियों को कोई लाभ हुआ और न ही अंग्रेज़ों को, परंतु इस युद्ध ने भारतीय राजाओं की कमज़ोरियों को उजागर कर दिया और यह स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय प्रणाली से प्रशिक्षित और सुव्यवस्थित छोटी सेना भी भारतीय नरेशों की बड़ी सेना को परास्त कर सकती है।
- फ्राँसीसी सत्ता और शक्ति का प्रभुत्व दक्षिण भारत के राज्यों पर जम गया और भारतीय नरेश अपनी राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिये फ्राँसीसी सहायता प्राप्त करने को उत्सुक हो गए।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध *(1749–1754)*

- इस युद्ध की पृष्ठभूमि भारतीय परिस्थितियों ने तैयार की। हैदराबाद के संस्थापक (एक स्वतंत्र राज्य के रूप में) निज़ाम-उल-मुल्क की 1748 में मृत्यु के बाद उसके पुत्र नासिर जंग और पौत्र मुज़फ्फरजंग में गद्दी के लिये संघर्ष छिड़ गया।
- कर्नाटक में भी ऐसी स्थिति तब बन गई जब मराठों ने 7 वर्ष तक कैद में रखने के बाद चंदा साहब को आज़ाद कर दिया। ऐसे में अनवरुद्दीन व चंदा साहब के बीच भी गद्दी के लिये संघर्ष छिड़ गया।
- फ्राँसीसियों ने चंदा साहब व मुज़फ्फरजंग का समर्थन किया तो अंग्रेज़ों ने अनवरुद्दीन व नासिरजंग का।
- 1749 में अंबर के युद्ध में अनवरुद्दीन मारा गया तथा उसके बेटे मुहम्मद अली ने त्रिचनापल्ली में शरण ले ली।
- 1750 में हैदराबाद में नासिरजंग भी मारा गया और मुज़फ्फरजंग नवाब बना। उसने प्रसन्न होकर फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले को मसुलीपट्टनम व पॉण्डिचेरी का क्षेत्र प्रदान कर दिया और साथ ही डूप्ले को कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक के क्षेत्र का गवर्नर बनाया।
- मुज़फ्फरजंग की मृत्यु के बाद सलाबतजंग द्वारा फ्राँसीसियों को उत्तरी सरकार का क्षेत्र (मुस्तफा नगर, चिरकाल, राजमुंद्री, एल्लोर) प्रदान किया गया। ध्यातव्य है कि इसके पूर्व चंदा साहब ने भी फ्राँसीसियों को पॉण्डिचेरी के कई गाँव प्रदान किये थे।
- डूप्ले ने हैदराबाद में बुस्सी के नेतृत्व में एक फ्रेंच सैन्य टुकड़ी तैनात की। इस तरह दक्षिणी क्षेत्र में फ्राँसीसियों का नियंत्रण और भी प्रभावी हो गया।
- एक ब्रिटिश क्लर्क के रूप में भारत आए क्लाइव ने कूटनीति का प्रयोग किया और उसने त्रिचनापल्ली पर दबाव कम करने के लिये अर्काट के किले को घेर लिया।
- इसी समय तंजौर के सेनापति ने धोखे से चंदा साहब की हत्या कर दी और जब त्रिचनापल्ली पर फ्राँसीसियों ने आक्रमण किया, वे अंग्रेज़ों से परास्त हुए। इसी समय फ्राँसीसी सरकार द्वारा डूप्ले को

4 भारतीय राजव्यवस्था एवं कल्याणकारी योजनाएँ
(Indian Polity and Welfare Schemes)

संविधान की प्रमुख विशेषताएँ एवं उद्देशिका

हर संविधान का एक दर्शन होता है। भारत के संविधान का भी एक दर्शन है, जो जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत 'उद्देश्य प्रस्ताव' में निहित है। यही उद्देश्य प्रस्ताव संविधान की 'प्रस्तावना' (Preamble) का आधार बना और इसी ने संपूर्ण संविधान के 'दर्शन' को मूर्त रूप प्रदान किया। उद्देशिका (प्रस्तावना) को 'संविधान की आत्मा' भी कहा जाता है।

संविधान सभा के गठन का विचार सर्वप्रथम वामपंथी नेता एम. एन. रॉय द्वारा 1934 में रखा गया था।

संविधान की उद्देशिका

उद्देशिका को संविधान सभा ने 22 जनवरी, 1947 को स्वीकार किया, जिसे जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसंबर, 1946 को उद्देश्य-प्रस्ताव के रूप में संविधान सभा के समक्ष पेश किया था।

प्रस्तावना (उद्देशिका)

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिये,

तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता** बढ़ाने के लिये

दृढ़ संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति-मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

- प्रस्तावना प्रवर्तनीय नहीं है अर्थात् इसकी व्यवस्थाओं को लागू करवाने के लिये न्यायालय का सहारा नहीं लिया जा सकता।
- भारतीय संविधान, संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949 को स्वीकृत, अंगीकृत व अधिनियमित हुआ था, जबकि 26 जनवरी, 1950 से पूर्ण भारतीय संविधान लागू हुआ था।
- संविधान को 26 जनवरी के दिन लागू करने का निर्णय, भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के द्वारा लाहौर अधिवेशन (दिसंबर 1929) में की गई घोषणा तथा 26 जनवरी, 1930 के दिन को पूर्ण स्वराज्य दिवस के रूप में मनाए जाने के कारण लिया गया।
- संविधान सभा का चुनाव अप्रत्यक्ष निर्वाचन पद्धति द्वारा हुआ था, जिसमें सामान्यत: प्रत्येक 10 लाख की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि चुना गया।

संविधान सभा में कुल 389 सीटें (ब्रिटिश भारत 296, देशी रियासतें 93) थीं, जिनमें ब्रिटिश भारत की सीटों में कॉन्ग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 व अन्य छोटे दलों को 15 सीटें प्राप्त हुईं। संविधान सभा में कुल 15 महिलाएँ थीं।

- संविधान की निर्माण प्रक्रिया में श्री बी.एन. राव को संवैधानिक सलाहकार नियुक्त किया गया तथा विश्व के लगभग 60 महत्त्वपूर्ण देशों के संविधान का अध्ययन किया गया।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर, 1946 को हुई थी। संविधान के फाइनल ड्राफ्ट को बनाने में 2 साल 11 माह और 18 दिनों का समय लगा था।
- संविधान सभा में संविधान का प्रथम वाचन 4 से 9 नवंबर, 1948 तक, द्वितीय वाचन 15 नवंबर, 1948 से 17 अक्तूबर, 1949 तक तथा तृतीय वाचन 14 नवंबर से 26 नवंबर 1949 तक चला।
- संविधान सभा प्रतीक (मुहर)-हाथी
- एस.एन. मुखर्जी को संविधान सभा का मुख्य प्रारूपकार नियुक्त किया गया था।
- संविधान सभा के 7वें अधिवेशन में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
- भारतीय संविधान की मूल प्रतियों को हीलियम में रखकर सुरक्षित रखा गया है।
- भारतीय संविधान पूर्णत: हस्तलिखित है। इसे श्री प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने लिखा था।
- संविधान के पृष्ठों (हिंदी संस्करण) को सजाने का कार्य शांति निकेतन के कलाकार नंदलाल बोस द्वारा किया गया।
- संविधान में कुल 395 अनुच्छेद, 22 भाग व 12 अनुसूचियाँ हैं।
- केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य (1973) के मामले में अधिकतर न्यायाधीशों ने माना कि उद्देशिका संविधान का अंग है। अत: उद्देशिका में भी संशोधन किया जा सकता है, परंतु यह संशोधन 'आधारभूत संरचना के सिद्धांत' के अधीन होगा। प्रस्तावना का प्रयोग संविधान की व्याख्या के लिये किया जा सकता है।

5 भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy)

अर्थशास्त्र (Economics)

एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र के अंतर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि व्यक्ति, समाज और सरकार द्वारा किस तरह से अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर संसाधनों का इस्तेमाल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किया जाता है।

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था *(Economics and the Economy)*

अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध सामान्यत: सिद्धांत और व्यवहार का है। जहाँ अर्थशास्त्र बाज़ार के सिद्धांतों, रोज़गार आदि की बात करता है, वहीं अर्थव्यवस्था किसी क्षेत्र विशेष की समस्त आर्थिक क्रियाओं को प्रदर्शित करती है।

अत: किसी क्षेत्र विशेष के अनुकूल अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का व्यावहारिक उपयोग ही उस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कहलाता है।

अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण

अर्थव्यवस्थाओं (देशों) द्वारा अपनाई गई उत्पादन प्रणालियों तथा उनमें राज्य या सरकार की भूमिका के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है-

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

- इस अर्थव्यवस्था में किसका उत्पादन होगा, कितना होगा और उसकी बिक्री किस कीमत पर होगी, इन सभी का निर्धारण बाज़ार द्वारा किया जाता है। इसमें सरकार की कोई आर्थिक भूमिका नहीं होती।
- पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्र का उद्‌गम स्रोत एडम स्मिथ की पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' (1776) को माना जाता है।

राज्य अर्थव्यवस्था

- इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आपूर्ति और कीमत का फैसला सरकार द्वारा किया जाता है। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं को केंद्रीकृत नियोजित अर्थव्यवस्था भी कहते हैं।
- इस प्रकार की अर्थव्यवस्था का पहला सिद्धांत जर्मन दार्शनिक कार्ल मार्क्स (1818–1883) ने दिया था।
- बोल्शेविक क्रांति (1917) के फलस्वरूप सोवियत संघ में राज्य अर्थव्यवस्था का विकास हुआ, जहाँ इसे समाजवादी अर्थव्यवस्था भी कहते हैं। बाद के वर्षों में चीन तथा पूर्वी यूरोप के कई देशों में यह अर्थव्यवस्था प्रचलित हुई।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

इसमें कुछ आधारभूत और महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों की आर्थिक ज़िम्मेदारी सरकार की होती है तथा बाकी आर्थिक गतिविधियाँ निजी क्षेत्र के लिये छोड़ दी जाती हैं। अत: मिश्रित अर्थव्यवस्था में राज्य अर्थव्यवस्था तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, दोनों के लक्षण विद्यमान रहते हैं।

- जॉन मेनार्ड केंस ने अपनी पुस्तक 'द जनरल थ्योरी ऑफ एंप्लायमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी' (1936) में सुझाव दिया कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था द्वारा समाजवादी अर्थव्यवस्था को अपने में समाहित करना चाहिये। ऐसी ही सलाह 1950 के दशक में ऑस्कर लांज ने समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं को दिया था। उनके अनुसार समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं को पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अच्छे तत्त्वों को अपने में समाहित करना चाहिये।
- भारत सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र के सहअस्तित्व के कारण एक मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों के आधार पर इसे निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बाँटा गया है, जिन्हें अर्थव्यवस्था का क्षेत्र/क्षेत्रक कहते हैं-

प्राथमिक क्षेत्र

- वह क्षेत्र जहाँ प्राकृतिक संसाधनों को कच्चे तौर पर प्राप्त किया जाता है, जैसे- कृषि कार्य, उत्खनन, पशु पालन, मछली पालन इत्यादि।
- इस क्षेत्र को कृषि एवं संबद्ध गतिविधियाँ भी कहा जाता है।

द्वितीयक क्षेत्र

- वह क्षेत्र जो प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को अपनी गतिविधियों में कच्चे माल के रूप में उपयोग करता है द्वितीयक क्षेत्र कहलाता है।
- इस क्षेत्र में विनिर्माण कार्य होता है जिस कारण इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
- लौह और इस्पात उद्योग, वाहन उद्योग, वस्त्र उद्योग, फर्निचर उद्योग इत्यादि इसके अंतर्गत आते हैं।
- इसमें कुशल श्रमिक को 'व्हाइट कॉलर जॉब' तथा उत्पादन में प्रत्यक्ष रूप से संलग्न श्रमिक को 'ब्लू कॉलर जॉब' वर्ग नाम से संबोधित किया जाता है।

तृतीयक क्षेत्र

- यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था में सेवाओं के उत्पादन से संबंधित होता है।
- सेवाओं में बैंकिंग, बीमा, चिकित्सा, शिक्षा, पर्यटन, संचार, रिटेल इत्यादि क्षेत्र आते हैं।
- इसे 'सेवा क्षेत्र' के नाम से भी जाना जाता है।

अर्थव्यवस्था के प्रकार

किसी अर्थव्यवस्था की सकल आय में उसके क्षेत्रकों के योगदान तथा उन पर निर्भर जनसंख्या के आधार पर अर्थव्यवस्थाएँ निम्न प्रकार की होती हैं-

- निरपेक्ष गरीबी को पहली बार संयुक्त राष्ट्र के कोपेनहेगन में आयोजित विकास सम्मेलन (1995) में परिभाषित किया गया तथा यह कोपेनहेगन घोषणा पत्र के प्रमुख लक्ष्यों में से एक था।
- इस तरह की गरीबी सामान्यत: विकासशील देशों में पाई जाती है।

सापेक्षिक गरीबी (Relative Poverty)

सापेक्षिक गरीबी की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब किसी देश या क्षेत्र के कुछ लोगों की आय या जीवन स्तर सामान्य लोगों से निम्न होता है।

लॉरेंज वक्र

किसी अर्थव्यवस्था में आय के वास्तविक वितरण को दर्शाने हेतु लॉरेंज वक्र का प्रयोग किया जाता है। यह समाज में आर्थिक वितरण और आर्थिक विषमता की माप हेतु एक ज्यामितीय विधि है। यह वक्र निरपेक्ष रेखा से आय के वास्तविक वितरण के विचलन को दर्शाता है।

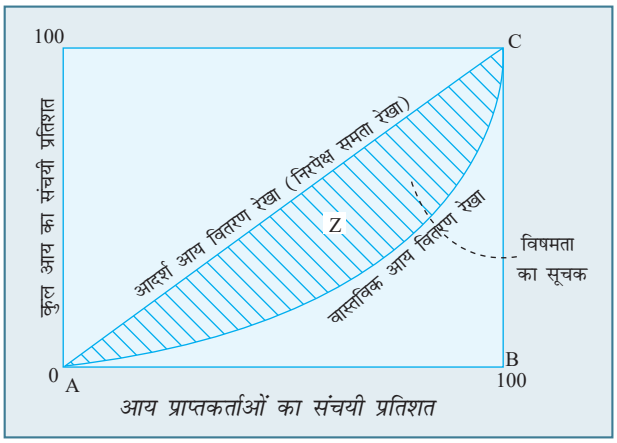

गिनी गुणांक *(Gini Coefficient)*

- लॉरेंज वक्र द्वारा अभिव्यक्त आर्थिक विषमता के गणितीय मान (Mathematical Value) को गिनी गुणांक कहा जाता है।
- लॉरेंज वक्र जहाँ सिर्फ यह बताता है कि असमानता घट रही है या बढ़ रही है, वहीं गिनी गुणांक यह भी बतलाता है कि असमानता कितनी बढ़ रही है या घट रही है।
- ऊपर दिये गए चित्र में-

$$\text{गिनी गुणांक (G)} = \frac{\text{छायांकित क्षेत्रफल (z)}}{\text{समता रेखा के नीचे का संपूर्ण (}\Delta\text{ABC) क्षेत्रफल}}$$

- गिनी गुणांक = 0, का अर्थ है पूर्ण समानता
- गिनी गुणांक =1, का अर्थ है पूर्ण असमानता

लॉरेंज वक्र तथा **गिनी गुणांक** सापेक्ष गरीबी मापन की विधियाँ है।

भारत के संदर्भ में गरीबी

- भारत में गरीबी निर्धारण का आधार उपभोग व्यय है।
- भारत में आज़ादी के बाद प्रथम बार 1971 में दांडेकर-रथ फॉर्मूले के आधार पर वैज्ञानिक तरीके से गरीबी रेखा का निर्धारण किया गया।
- 1979 में अलघ समिति की रिपोर्ट के आधार पर ग्रामीण क्षेत्रों में 2400 कैलोरी और शहरी क्षेत्रों में 2100 कैलोरी से कम उपभोग करने वाले व्यक्ति को गरीब माना गया।
- 1989 में गठित लकड़ावाला समिति द्वारा प्रत्येक राज्य के लिये मूल्य स्तर के आधार पर अलग-अलग गरीबी रेखा के निर्धारण का प्रस्ताव किया गया।
- भारत में गरीबी के आकलन के संदर्भ में क्रियाविधि (Methodology) के निर्धारण के लिये योजना आयोग ने 2005 में सुरेश तेंदुलकर की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया। जिसने 2009 में अपनी रिर्पोट सौंपी। पुन: योजना आयोग द्वारा 2012 में सी. रंगराजन समिति का गठन किया गया जिसने 2014 में अपनी रिपोर्ट सौंपी।
- रंगराजन समिति के अनुसार 2011-12 में भारत की 29.5 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रही थी, जबकि तेंदुलकर समिति के अनुसार यह संख्या 21.9 प्रतिशत ही थी। इस अंतर का कारण इन समितियों द्वारा गरीबी निर्धारण हेतु उपयोग लाई गई अलग-अलग विधियाँ थीं।
- राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) के 68 वें दौर के आँकड़े (2011-12) के अनुसार भारत में छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक निर्धनता अनुपात (39.93 प्रतिशत) है। इसके पश्चात् झारखंड (36.96 प्रतिशत), मणिपुर (36.89 प्रतिशत), अरुणाचल प्रदेश (34.67 प्रतिशत) तथा बिहार (33.74 प्रतिशत) है। सबसे कम निर्धनता गोवा (5.09 प्रतिशत), केरल (7.05 प्रतिशत), हिमाचल प्रदेश (8.06 प्रतिशत), सिक्किम (8.19 प्रतिशत) जैसे राज्यों में है। गरीबी के ये आँकड़े तेंदुलकर विधि द्वारा परिकलित किये गए थे।

बहुआयामी गरीबी सूचकांक *(Multidimensional Poverty Index– MPI)*

- एम.पी.आई. की अवधारणा को यूएनडीपी (UNDP) द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट-2010 में विकसित किया गया।
- बहुआयामी गरीबी निर्देशांक के तीन आयामों, यथा-स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जीवन निर्वाह का स्तर के अंतर्गत दस संकेतक- शिशु मृत्यु, पोषण, स्कूल में नामांकन, विद्यालयी शिक्षा, संपत्तियाँ, खाना बनाने का ईंधन, आवास, विद्युत, जल एवं शौचालय शामिल हैं।
- बहुआयामी गरीबी सूचकांक भारत में गरीबी की तीव्रता की माप के लिये सबसे उपयुक्त है।

ग्लोबल हंगर इंडेक्स *(GHI)*

एक ऐसा सूचकांक जो क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर भूख को मापने तथा उस पर नज़र रखने के लिये अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI) द्वारा विकसित किया गया है।

GHI फॉर्मूला के घटक

- लोगों में अल्प पोषण
- (Child Wasting) 5 वर्षों से कम उम्र के बच्चे जिनका वज़न उनकी लंबाई के हिसाब से कम है।
- (Child Stunting) 5 वर्षों से कम उम्र के बच्चे जिनकी लंबाई उनकी उम्र के हिसाब से कम है।
- 5 वर्षों से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर

6 सामान्य विज्ञान एवं कंप्यूटर (General Science and Computer)

भौतिकी (Physics)

भौतिक विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जिसमें द्रव्य, ऊर्जा तथा उनकी अन्योन्य क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

मापन (Measurement)

किसी भौतिक राशि का मापन एक निश्चित, आधारभूत एवं मान्यताप्राप्त, संदर्भ-मानक से राशि की तुलना करना है तथा इस संदर्भ मानक को 'मात्रक' कहते हैं। दैनिक जीवन में भौतिक राशियों की संख्या अत्यधिक है, फिर भी इनके मापन के लिये मात्रकों की सीमित संख्या ही आवश्यक है, क्योंकि ये राशियाँ परस्पर अंतर्संबंधित होती है।

- मूल राशियों को व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त मात्रकों को मूल मात्रक कहते हैं।
- मूल मात्रकों के संयोजन से प्राप्त व्युत्पन्न राशियों के मात्रक को 'व्युत्पन्न मात्रक' कहते हैं।
- वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य प्रणाली 'सिस्टम इंटरनेशनल डि यूनिट्स' है, जिसे संकेताक्षर में SI लिखा जाता है। SI में सात मूल मात्रक हैं।
- SI से पूर्व तीन प्रणालियाँ मापन के लिये उपयोग में लाई जाती थीं-
  - CGS प्रणाली में सेंटीमीटर, ग्राम, सेकेंड।
  - FPS प्रणाली में फुट, पाउंड, सेकेंड।
  - MKS प्रणाली में मीटर, किलोग्राम, सेकेंड।

मूल राशि	मात्रक	प्रतीक
लंबाई	मीटर	m
द्रव्यमान	किलोग्राम	kg
समय	सेकेंड	s
विद्युत धारा	एंपीयर	A
ऊष्मा गतिक ताप	केल्विन	K
पदार्थ की मात्रा	मोल	mol
ज्योति-तीव्रता	कैंडेला	cd

- प्रकाश की निर्वात में चाल 3×10^8 मीटर/से. होती है। सूर्य से धरती तक पहुँचने में प्रकाश को लगभग 8 मिनट 20 सेकेंड लगते हैं।
- प्रकाश वर्ष, निर्वात में प्रकाश द्वारा 1 वर्ष में तय की गई दूरी (9.46×10^{15} मीटर) होती है। इसे एक प्रकाश वर्ष कहते हैं।
- पारसेक का उपयोग अत्यधिक लंबी खगोलीय दूरी को व्यक्त करने में किया जाता है।
- अत्यधिक कम दूरी को मापने के लिये नैनोमीटर का उपयोग किया जाता है। एक नैनोमीटर में 1×10^{-9} मीटर होता है।

कुछ अन्य मापन की इकाई	
भौतिक राशि	**मापन की इकाई**
दाब	पास्कल (Pa)
ध्वनि की प्रबलता	डेसीबल (db)
प्रकाश की तरंगदैर्ध्य	ऐंगस्ट्राम (Å)
नौसंचालन में दूरी	नॉटिकल मील (NM)
ऊष्मा	कैलोरी (Cal)
विद्युत विभवांतर	वोल्ट (v)
तापमान	सेल्सियस (°C)
आवृत्ति	हर्ट्ज (Hz)
जल का बहाव	क्यूसेक (Cusec)
ओजोन परत की मोटाई	डॉब्सन इकाई (Du)
ज्योति फ्लक्स	ल्यूमेन (lm)
चुंबकीय प्रेरण (क्षेत्र)	टेस्ला (T)
समतल कोण	रेडियन (rad)
घन कोण	स्टेरेडियन (Sr)

विमीय सूत्र एवं विमीय समीकरण

किसी भौतिक राशि का विमीय सूत्र वह व्यंजक है, जो यह दर्शाता है कि किसी भौतिक राशि में किस मूल राशि की कितनी विमाएँ हैं। विमाओं द्वारा ही किसी भौतिक राशि की प्रकृति की व्याख्या की जाती है। लंबाई की विमा को [L], समय की [T] तथा द्रव्यमान की विमा को [M] से प्रदर्शित करते हैं।

जब किसी भौतिक राशि को मूल राशियों और उनकी विमाओं के रूप में निरूपित किया जाता है तो इसे उस राशि का विमीय समीकरण कहते हैं।

उदाहरणस्वरूप आयतन का विमीय समीकरण-

(1) आयतन = लंबाई × चौड़ाई × ऊँचाई

$= [L] [L] [L] = [M^0 L^3 T^0]$

विज्ञान की वह शाखा जिसके अंतर्गत पदार्थ के गुणों, उसके संघटन और उसमें उपस्थित परमाणुओं की संरचना के अध्ययन के साथ-साथ पदार्थ की अवस्था में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है, उसे 'रसायन विज्ञान' (Chemistry) कहते हैं।

लेवोजियर (Lavoisier) को आधुनिक रसायन विज्ञान का जनक कहा जाता है।

द्रव्य (Matter)

यह वह वस्तु है, जिसका आयतन होता है, स्थान घेरती है, जड़त्व का गुण प्रदर्शित करती है, ऊर्जा लगाकर इसकी अवस्था में परिवर्तन किया जा सकता है। द्रव्य के विभिन्न स्वरूप को 'पदार्थ' कहते हैं। पदार्थ का निश्चित गुण एवं संघटन होता है। उदाहरण- मिट्टी, मोम, चूना, दूध, ऑक्सीजन आदि।

प्राचीन काल में भारतीय दार्शनिक महर्षि कणाद ने बताया कि प्रत्येक पदार्थ अतिसूक्ष्म अविभाज्य कणों से बने हैं, जिसे उन्होंने 'परमाणु' कहा। एक अन्य भारतीय दार्शनिक पकुधा काच्चायन (Pakudha Kaccayana) ने यह बताया कि यह कण संयुक्त होकर द्रव्य के भिन्न-भिन्न रूपों को प्रदान करते हैं।

द्रव्य की अवस्थाएँ *(States of Matter)*

मुख्यत: द्रव्य (पदार्थ) की तीन अवस्थाएँ होती हैं- ठोस, द्रव तथा गैस।

ठोस अवस्था (Solid State)

इस अवस्था में पाई जाने वाली वस्तुओं का एक निश्चित आकार, स्पष्ट सीमाओं के साथ-साथ एक निश्चित आयतन होता है। ठोस वस्तुओं में दृढ़ता का गुण पाया जाता है अर्थात् बल लगाने पर ये टूट सकती हैं। उदाहरण- लोहा, पत्थर, किताब, सूई इत्यादि।

द्रव अवस्था (Fluid State)

पदार्थ की वह अवस्था जिसका आकार अनिश्चित, परंतु आयतन निश्चित होता है। उदाहरण– शीतल पेय, दूध, इत्यादि।

गैसीय अवस्था (Gaseous State)

पदार्थ की वह अवस्था जिसमें पदार्थ के आयतन एवं आकार दोनों अनिश्चित होते हैं। उदाहरण– हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, हीलियम गैस इत्यादि।

आजकल वैज्ञानिक पदार्थ की पाँच अवस्थाओं को स्वीकार कर रहें है। बोस-आइंस्टीन कंडनसेट, ठोस, द्रव, गैस और प्लाज्मा।

- **प्लाज्मा (Plasma):** यह पदार्थ की चौथी अवस्था मानी जाती है। इसमें पदार्थ के इलेक्ट्रॉन किसी निश्चित परमाणु से बँधे होने बजाय स्वतंत्र अवस्था में गतिशील रहते हैं। पदार्थ की इस अवस्था में पदार्थ के परमाणु अत्यधिक उत्तेजित होकर आयनीकृत गैस की अवस्था में पहुँच जाते हैं और प्रकाश ऊर्जा का उत्सर्जन करने लगते हैं। गैस के स्वभाव के कारण इस प्लाज़्मा में विशेष रंग की चमक होती है। उदाहरणस्वरूप फ्लोरेसेंट ट्यूब के अंदर हीलियम गैस विद्युत ऊर्जा के प्रवाह से आयनीकृत हो जाती है और प्रकाश उत्पन्न करने लगती है। सूर्य और तारों में प्रकाश का कारण प्लाज़्मा ही है।
- **बोस आइंस्टीन कंडनसेट:** अत्यंत कम घनत्व वाली किसी गैस को बहुत कम तापमान तक ठंडा करने पर इस अवस्था का निर्माण होता है। इस अवस्था का नाम भारतीय वैज्ञानिक सत्येंद्रनाथ बोस और अल्बर्ट आइंस्टीन के नाम पर 'बोस-आइंस्टीन कंडनसेट' रखा गया है।

पदार्थ की अवस्था में परिवर्तन *(Changes in State of Matter)*

एक ही पदार्थ तीनों भौतिक अवस्थाओं में रह सकता है।

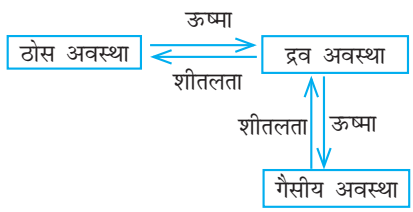

तत्त्व *(Element)*

- फ्राँस के रसायनज्ञ एंटोनी लॉरेंट लेवेजियर ने सबसे पहले तत्त्व की परिभाषा को प्रयोगात्मक रूप से प्रमाणित किया।
- तत्त्व पदार्थ का वह मूल रूप है, जिसे रासायनिक अभिक्रिया द्वारा अन्य सरल पदार्थों में विभाजित नहीं किया जा सकता।

धातु *(Metal)*

- ये चमकीली तथा ताप और विद्युत की सुचालक होती है।
- ये तन्य होती हैं, इनको तार के रूप में खींचा जा सकता है।
- धातुओं में आघात वर्धनीयता (Malleability) का गुण पाया जाता है। उदाहरण– सोना (Au), चांदी (Ag), तांबा (Cu), लोहा (Fe), सोडियम (Na), पोटैशियम (K) इत्यादि।
- पारा (Hg) सामान्य ताप पर द्रव अवस्था में पाई जाने वाली धातु है।

अधातु *(Non-metal)*

अधातुएँ निम्नलिखित गुणों में से किसी एक गुण अथवा सभी को प्रदर्शित करती हैं।

- ये विभिन्न रंगों की होती हैं तथा ये ताप और विद्युत की कुचालक होती हैं।
- ये चमकीली और आघातवर्ध्य नहीं होती हैं। उदाहरण– हाइड्रोजन (H_2), ऑक्सीजन (O_2), आयोडीन (I_2), कार्बन (C) इत्यादि।

7 सामान्य अंग्रेज़ी (General English)

VOCABULARY

- **abdicate (v.)** to give up a position, usually one of leadership
- **aberration** (n.) something that differs from the usual
- **abnegation** (n.) denial of comfort to oneself
- **abstruse** (adj.) hard to comprehend
- **acerbic** (adj.) biting, bitter in tone or taste
- **acrimony** (n.) bitterness, discord
- **acumen** (n.) keen insight
- **advocate** (v.) to argue in favor of something
- **aesthetic** (adj.) artistic, related to the appreciation of beauty
- **agnostic** (adj.) believing that the existence of God cannot be proven or disproven
- **alacrity** (n.) eagerness, speed
- **alleviate** (v.) to relieve, make more bearable
- **altercation** (n.) a dispute
- **ambiguous** (adj.) uncertain, variably interpretable
- **ambivalent** (adj.) having opposing feelings
- **amenable (**adj.) willing, compliant
- **amorous** (adj.) showing love, particularly sexual
- **amorphous** (adj.) without definite shape or type
- **anachronistic** (adj.) being out of correct chronological order
- **analgesic** (n.) something that reduces pain
- **anathema** (n.) a cursed, detested person
- **anecdote** (n.) a short, humorous account
- **anomaly** (n.) something that does not fit into the normal
- **anonymous** (adj.) being unknown, unrecognized
- **antagonism** (n.) hostility
- **antecedent** (n.) something that came before
- **anthology** (n.) a selected collection of writings, songs, etc.
- **antipathy** (n.) a strong dislike, repugnance
- **antithesis** (n.) the absolute opposite
- **apathetic** (adj.) lacking concern,
- **apocryphal** (adj.) fictitious, false, wrong
- **appalling** (adj.) inspiring shock, horror
- **appropriate** (v.) to take, make use of
- **arbitrary** (adj.) based on factors that appear unreasonable
- **arbitration** (n.) the process or act of resolving a dispute
- **archetypal** (adj.) the most representative or typical example of something
- **aspersion** (n.) a curse, expression of ill-will
- **attribute** (n.) a facet or trait
- **audacious** (adj.) excessively bold
- **auspicious** (adj.) favorable, indicative of good
- **avarice** (n.) excessive greed
- **aversion** (n.) a particular dislike for something
- **ballad** (n.) a love
- **banal** (adj.) dull, commonplace
- **behemoth** (n.) something of tremendous power or size
- **bereft** (adj.) devoid of, without
- **blandish** (v.) to coax by using flattery
- **boisterous** (adj.) loud and full of energy
- **bombastic** (adj.) excessively confident, pompous
- **bourgeois** (n.) a middle-class person, capitalist
- **brazen** (adj.) excessively bold, brash
- **cacophony** (n.) tremendous noise, disharmonious sound
- **cadence** (n.) a rhythm, progression of sound
- **calamity** (n.) an event with disastrous consequences
- **callous** (adj.) harsh, cold, unfeeling
- **camaraderie** (n.) brotherhood, jovial unity
- **candor** (n.) honesty, frankness
- **capitulate** (v.) to surrender
- **capricious** (adj.) subject to whim, fickle
- **catalyze** (v.) to charge, inspire
- **caucus** (n.) a meeting usually held by people working toward the same goal
- **chastise** (v.) to criticize severely
- **chronological** (adj.) arranged in order of time
- **circumlocution** (n.) indirect and wordy language
- **clairvoyant** (adj.) able to perceive things that normal people cannot
- **clandestine** (adj.) secret
- **clemency** (n.) mercy
- **cogent** (adj.) intellectually convincing
- **cognizant** (adj.) aware, mindful
- **coherent** (adj.) logically consistent, intelligible
- **collateral** (adj.) secondary
- **colloquial** (adj.) characteristic of informal conversation
- **collusion** (n.) secret agreement, conspiracy
- **colossus** (n.) a gigantic statue or thing
- **commodious** (adj.) roomy
- **complacency** (n.) self-satisfied ignorance of danger
- **compliant** (adj.) ready to adapt oneself to another's wishes
- **conciliatory** (adj.) friendly,
- **concomitant** (adj.) accompanying at the same time as another thing and is connected with
- **concord** (n.) harmonious agreement
- **confidant** (n.) a person entrusted with secrets

8 संख्यात्मक अभियोग्यता (Quantitative Aptitude)

संख्या पद्धति (Number System)

विभाज्यता

- यदि किसी संख्या का इकाई अंक 0, 2, 4, 6 या 8 है तो वह संख्या 2 से विभाज्य होगी।
- यदि किसी संख्या के सभी अंकों का योग 3 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 3 से विभाज्य होगी।
- दी गई संख्या 9 से भी विभाज्य होगी, यदि इसके सभी अंकों का योग 9 से विभाज्य है।
- यदि दी गई संख्या का इकाई का अंक 5 या 0 है तो वह संख्या 5 से विभाज्य होगी।
- यदि दी गई संख्या के इकाई और दहाई अंक से बनी दो अंकों की संख्या 4 से विभाज्य है, तो वह संख्या भी 4 से विभाज्य होगी।
- यदि किसी संख्या के इकाई, दहाई तथा सैकड़े के अंकों से बनी तीन अंकों की संख्या 8 से पूर्णतया विभाज्य है, तो वह संख्या भी 8 से विभाज्य होगी।
- दी गई संख्या 11 से तभी विभाज्य होगी जब संख्या के सम स्थानों के अंकों का योग तथा विषम स्थानों के अंकों के योग का अन्तर 11 से विभाज्य होगा।

शेषफल अवधारणा

जब किसी संख्या a से किसी अन्य संख्या b को भाग दिया जाता है तो a को भाजक (Divisor), b को भाज्य (Dividend) कहा जाता है। भाजक, भाज्य को जितनी बार विभाजित करता है उसे भागफल तथा जो भी शेष बचता है, उसे शेषफल कहते हैं।

भाजक) भाज्य (भागफल
शेषफल

$$\text{भाज्य} = (\text{भाजक} \times \text{भागफल}) + \text{शेषफल}$$

उदाहरण 1: किसी संख्या, N को 117 से विभाजित करने पर भागफल 13 तथा शेषफल 27 प्राप्त होता है, तो N का मान ज्ञात कीजिये–

हल: अभीष्ट संख्या, $N = (117 \times 13) + 27$
$= 1548$

इकाई अंक

किसी व्यंजक का इकाई अंक प्राप्त करने के लिये केवल इकाई के अंकों पर संक्रिया करते हैं, और जब प्राप्त संख्या में एक से अधिक अंक हो जाए तो इकाई अंक के अलावा सभी अंक छोड़ देते हैं तथा इकाई के अंकों से पुन: संक्रिया करते हैं।

जैसे– $216 \times 423 \times 145 \times 325$

$6 \times 3 \times 5 \times 5$

$18 \quad 25$

8×5

40

अत: $216 \times 423 \times 145 \times 325$ का इकाई अंक '0' होगा।

यदि व्यंजक में संख्याएँ प्राकृतिक घात (x^y) के रूप में दी गई हैं, तो निम्नलिखित नियम से हल करते हैं।

- यदि संख्या का इकाई अंक शून्य है, तो इसकी सभी प्राकृतिक घात करने पर प्राप्त संख्या में इकाई का अंक शून्य ही होगा।
- यदि संख्या का इकाई अंक 5, 6, 1 है, तो संख्या की सभी प्राकृतिक घात करने पर प्राप्त संख्या में इकाई का अंक भी क्रमश: 5, 6, 1 ही रहेगा।
- जब संख्या का इकाई अंक 2, 3, 7 या 8 होगा, तो उसकी प्राकृतिक घात को 4 से भाग करके शेषफल प्राप्त करेंगे और इसी शेषफल के अनुसार इकाई अंक प्राप्त होगा।
- प्राप्त शेषफल 1, 2, 3 होने पर,
  अभीष्ट इकाई अंक = (संख्या का इकाई अंक)$^{\text{प्राप्त शेषफल}}$ का इकाई अंक
- शेषफल 0 (अर्थात 4) होने पर,
  अभीष्ट इकाई अंक = (संख्या का इकाई अंक)^4 का इकाई अंक

उदाहरण 2: $(5134)^{21} \times (2679)^{331}$ का इकाई अंक ज्ञात कीजिये–

हल: घातों को 4 से भाग देने पर,

$\frac{21}{4}$ का शेषफल $= 1$

$\frac{331}{4}$ का शेषफल $= 3$

अत:, अभीष्ट इकाई अंक $= (4^1) \times (9^3)$ का इकाई अंक

4×9 का इकाई अंक $= 6$

उदाहरण 3: $103 \times 101 \times 97 \times 99 \times 96$ का दहाई अंक ज्ञात कीजिये–

हल: दहाई अंक प्राप्त करने के लिये 100 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करना होगा। प्राप्त शेषफल का दहाई अंक ही व्यंजक का दहाई अंक होगा।

9. 120 मशीनी पुर्जों के मोटर में 5% पुर्जे खराब थे। 80 मशीनी पुर्जों के दूसरे मोटर में 10% पुर्जे खराब थे। दोनों मोटरों को मिलाकर खराब मशीनी पुर्जों का प्रतिशत कितना था?
(a) 7%
(b) 6.5%
(c) 7.5%
(d) 8%

10. तीन व्यक्ति A, B तथा C वेतनों का योग ₹72000 है, वे क्रमशः अपने वेतन का 80, 85 और 75 प्रतिशत खर्च कर देते हैं। उन तीनों की बचतों का अनुपात 8 : 9 : 20 है, तो A का वेतन कितना है?
(a) ₹20,000
(b) ₹16,000
(c) ₹22,000
(d) ₹18,000

उत्तरमाला

1. (c) 2. (d) 3. (c) 4. (b) 5. (c) 6. (c) 7. (c) 8. (b) 9. (a)
10. (b)

व्याख्या

1. छात्रों के नामांकन में आवश्यक वृद्धि % $= \frac{50}{(100-50)} \times 100$
$= 100\%$

2. अंत में, शिविर के खर्च में परिवर्तन $= \left[30 - 70 - \frac{30 \times 70}{100}\right]\%$
$= -61\%$
यहाँ ऋणात्मक चिह्न यह दर्शाता है कि शिविर के खर्च में 61% की कमी हो गई।

3. n वर्ष पूर्व शहर की जनसंख्या $= \frac{P}{\left(1+\frac{r}{100}\right)^n}$
(यहाँ 'P' शहर की वर्तमान जनसंख्या और 'r' जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि की दर को निरुपित करता है।)

3 वर्ष पूर्व शहर की जनसंख्या $= \frac{3000}{\left(1+\frac{20}{100}\right)^3} = 1736$

अभीष्ट प्रतिशत $= \frac{1736}{3000} \times 100 = 57.87\%$

4. 20% तथा 40% की क्रमिक वृद्धि का नेट परिवर्तन
$= 20 + 40 + \left(\frac{20 \times 40}{100}\right) = 68\%$
68% तथा 50% की क्रमिक वृद्धि का नेट परिवर्तन
$= 68 + 50 + \left(\frac{68 \times 50}{100}\right) = 152\%$

5. कुल मतदाताओं की संख्या $= 750$
पहले प्रत्याशी को प्राप्त मत $= 340$
अवैध पाए गए मतों की संख्या $= 10$
दूसरे प्रत्याशी को प्राप्त मत $= 750 - (340 + 10) = 400$
माना कि दूसरे प्रत्याशी को प्राप्त मत कुल मतों का x% है।
750 का x% $= 400$
$750 \times \frac{x}{100} = 400$
$x = \frac{400 \times 100}{750} = 53\frac{1}{3}\%$

6. माना कि कुल सैनिकों की संख्या $= x$
प्रत्येक सैनिक को प्राप्त भोजन के पैकेटों की संख्या = x का 25%
$= x \times \frac{25}{100} = \frac{x}{4}$
(कुल सैनिकों की संख्या) ×(प्रत्येक सैनिक को प्राप्त भोजन के पैकेटों की संख्या) = भोजन के पैकेटों की कुल संख्या
$(x) \times \left(\frac{x}{4}\right) = 324$
$x^2 = 324 \times 4$
$x = 36$
प्रत्येक सैनिक के हिस्से में आए भोजन के पैकेटों की संख्या
$= \frac{x}{4} = \frac{36}{4} = 9$

7. नीले गोले = 100, लाल गोले = 50, काले गोले = 50 गोले निकालने के पश्चात्
नीले गोले $= 100 - 25 = 75$
लाल गोले $= 50 - 25 = 25$
काले गोले $= 50$
अतः काले गोलों का प्रतिशत $= \frac{50}{75+25+50} \times 100\%$
$= \frac{50}{150} \times 100\% = 33\frac{1}{3}$

8. सेब के पेड़ $= 1500$
आम के पेड़ $= \frac{1500}{20} \times 100 = 7500$
नारियल के पेड़ $= \frac{7500}{25} \times 100 = 30{,}000$
कुल पेड़ $= \frac{30000}{60} \times 100 = 50000$

व्याख्या

1. रेफ्रीजरेटर का विक्रय मूल्य = ₹500

हानि प्रतिशत = 20%

$$\text{क्रय मूल्य} = \text{विक्रय मूल्य} \times \frac{100}{100 - \text{हानि प्रतिशत}}$$

$$= 500 \times \frac{100}{80}$$

$$= 500 \times \frac{100}{80}$$

क्रय मूल्य = ₹625

30% लाभ कमाने के लिये विक्रय मूल्य

$$= \text{क्रय मूल्य} \times \frac{(100 + \text{लाभ प्रतिशत})}{100}$$

$$= 625 \times \frac{(100+30)}{100}$$

$$= \frac{1625}{2} = ₹812.5$$

अभीष्ट विक्रय मूल्य = ₹812.5

2. लाभ प्रतिशत = 20%

लाभ = 20

$$\text{लाभ प्रतिशत} = \frac{\text{लाभ}}{\text{क्रय मूल्य}} \times 100$$

$$20\% = \frac{20}{\text{क्रय मूल्य}} \times 100$$

$$20 = \frac{20}{\text{क्रय मूल्य}} \times 100$$

$$\text{क्रय मूल्य} = \frac{20 \times 100}{20}$$

क्रय मूल्य = ₹100

20% की हानि पर बेचने पर विक्रय मूल्य

$$= \text{क्रय मूल्य} \times \frac{(100 - \text{हानि प्रतिशत})}{100}$$

$$= 100 \times \frac{(100-20)}{100}$$

$$= 100 \times \frac{80}{100}$$

विक्रय मूल्य = ₹80

20% की हानि पर बेचने के लिये वह मेज को ₹80 में बेचेगा।

3. माना कि क्रय मूल्य = x

लाभ = 600 – x

हानि = x – 300

प्रश्नानुसार,

लाभ = हानि

600 – x = x – 300

900 = 2x

x = ₹450

लाभ प्रतिशत = 60%

$$\text{विक्रय मूल्य} = 450 \times \frac{160}{100}$$

= ₹720

4. 40 आम का क्रय मूल्य = ₹20

$$1 \text{ आम का क्रय मूल्य} = ₹\frac{20}{40} = \frac{1}{2} = ₹0.5$$

20 आम का विक्रय मूल्य= ₹40

$$1 \text{ आम का विक्रय मूल्य} = ₹\frac{40}{20} = ₹2$$

लाभ = विक्रय मूल्य – क्रय मूल्य

लाभ = 2 – 0.5

= ₹1.50

$$\text{लाभ प्रतिशत} = \frac{\text{लाभ}}{\text{क्रय मूल्य}} \times 100$$

$$= \frac{1.50}{0.5} \times 100$$

$$= \frac{150}{50} \times 100 = 300\%$$

लाभ प्रतिशत = 300%

5. 4 संतरे का क्रय मूल्य = ₹2

$$1 \text{ संतरा का क्रय मूल्य} = \frac{2}{4}$$

$$100 \text{ संतरे का क्रय मूल्य} = \frac{2}{4} \times 100 = ₹50$$

इसी प्रकार,

$$150 \text{ संतरे का क्रय मूल्य} = ₹\frac{2}{2} \times 150$$

= ₹150

कुल 250 संतरे का क्रय मूल्य = 50 + 150

= ₹200

$$\text{दोनों प्रकार के संतरे का विक्रय मूल्य} = \frac{2}{3} \times 250$$

$$= \frac{500}{3} = ₹166.6$$

250 संतरे का विक्रय मूल्य = ₹166.6

यहाँ क्रय मूल्य> विक्रय मूल्य

$$\text{हानि प्रतिशत} = \frac{\text{हानि}}{\text{क्रय मूल्य}} \times 100$$

$$= \frac{200-166.6}{200} \times 100$$

$$= \frac{33.4}{200} \times 100 = 16.7\%$$

हानि प्रतिशत = 16.7%

9 सामान्य मानसिक योग्यता (General Mental Ability)

सादृश्यता परीक्षण (Analogy Test)

शब्द समरूपता संबंधित प्रश्न

निर्देश: *नीचे दिये गए प्रत्येक उदाहरण में चिह्न (::) के बायीं तरफ दो शब्द/अक्षर समूह/संख्याएँ हैं, जो अपास में किसी प्रकार संबंधित हैं। चिह्न (::) के दायी तरफ के शब्द/अक्षर समूह/संख्या का यदि प्रश्नवाचक चिह्न से वही संबंध हो तो प्रश्नवाचक चिह्न के स्थान पर शब्द/अक्षर समूह/संख्या होगा/होगी–*

उदाहरण 1: बल : न्यूटन :: कार्य : ?

हल: जिस प्रकार बल का मात्रक न्यूटन होता है, उसी प्रकार कार्य का मात्रक **जूल** होता है।

उदाहरण 2: शांति : अशांति :: उल्लास : ?

हल: जिस प्रकार शांति का विपरीत अशांति है, उसी प्रकार उल्लास का विपरीत **विषाद** है।

उदाहरण 3: जानवर : चिड़ियाघर :: कार : ?

हल: जिस प्रकार जानवर को चिड़ियाघर में रखा जाता है, उसी प्रकार कार को **गैरेज** में रखा जाता है।

उदाहरण 4: थर्मामीटर : तापमान :: आमीटर : ?

हल: जिस प्रकार थर्मामीटर से तापमान को मापा जाता है, उसी प्रकार आमीटर से **विद्युत धारा** को मापा जाता है।

उदाहरण 5: चिकित्सक : उपचार :: न्यायाधीश : ?

हल: जिस प्रकार चिकित्सक उपचार करता है, उसी प्रकार न्यायाधीश **निर्णय** करता है।

अंग्रेज़ी वर्णमाला के अक्षरों पर आधारित प्रश्न

उदाहरण 6: AE : HL :: GK : ?

हल: जिस प्रकार, AE $\xrightarrow[+7]{+7}$ HL, उसी प्रकार, GK $\xrightarrow[+7]{+7}$ **NR**

संख्या समरूपता से संबंधित प्रश्न

उदाहरण 7: 6 : 18 :: 4 : ?

हल: जिस प्रकार, 6 में 12 जोड़ने पर 18 प्राप्त होता है,

उसी प्रकार, 4 में 12 जोड़ने पर **16** प्राप्त होगा।

उदाहरण 8: 8 : 64 :: 14 : ?

हल: जिस प्रकार पहली संख्या, 8 का वर्ग करने पर दूसरी संख्या, 64 प्राप्त हुई,

उसी प्रकार तीसरी संख्या, 14 का वर्ग करने पर चौथी संख्या, **196** प्राप्त होगी।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश: *नीचे दिये गए प्रश्नों में चिह्न (::) की बायीं तरफ दो शब्द /अक्षर समूह/संख्याएँ हैं, जो आपस में किसी प्रकार संबंधित हैं। उसी आधार पर चिह्न (::) की दायीं तरफ दिये हुए शब्द/अक्षर समूह/संख्या से संबंधित विकल्पों में से उचित शब्द/अक्षर समूह/संख्या चुनिये।*

1. फिल्म : निर्देशक :: पुस्तक : ?
   (a) लेखक (b) प्रकाशक
   (c) निर्माता (d) संपादक
2. गुरुत्वाकर्षण : पृथ्वी :: शीतलता : ?
   (a) दिन (b) बर्फ
   (c) समुद्र (d) जंगल
3. घोड़ा : झुंड :: सिपाही : ?
   (a) नौसेना (b) बेड़ा
   (c) रेजिमेंट (d) इनमें से कोई नहीं
4. CLOSE : DMPTF :: DRIVEN : ?
   (a) FRJWEO (b) ESJWFO
   (c) ESIWFN (d) ESJVEO
5. EXCUSE : FZFYXK :: LABOUR : ?
   (a) MBERXW (b) MBDRWV
   (c) MCESZX (d) LBESZX
6. ADBN : BECO :: SHOE : ?
   (a) HSEO (b) TIOF
   (c) TIPF (d) THPE
7. 354 : 786 :: 435 : ?
   (a) 567 (b) 675
   (c) 867 (d) 868
8. 4 : 60 :: 8 : ?
   (a) 512 (b) 504
   (c) 64 (d) 624
9. 8 : 27 :: 343 : ?
   (a) 512 (b) 729
   (c) 64 (d) 216
10. 347 : 5 :: 932 : ?
    (a) 5 (b) 3
    (c) 4 (d) 2

उत्तर आकृतियाँ:

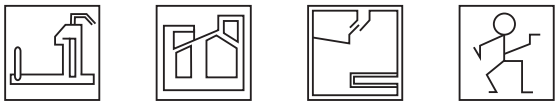

(a) (b) (c) (d)

2. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

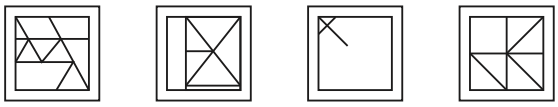

(a) (b) (c) (d)

3. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

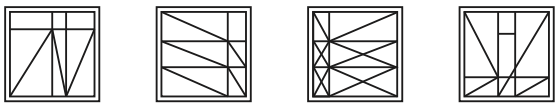

(a) (b) (c) (d)

4. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

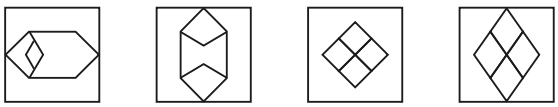

(a) (b) (c) (d)

5. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

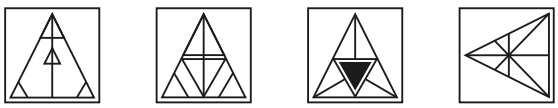

(a) (b) (c) (d)

6. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

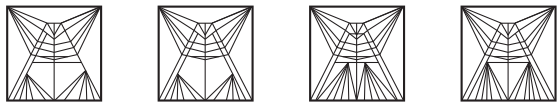

(a) (b) (c) (d)

7. प्रश्न आकृति:

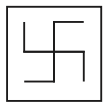

उत्तर आकृतियाँ:

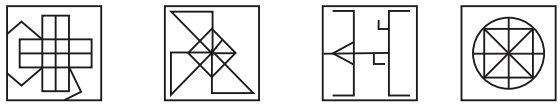

(a) (b) (c) (d)

8. प्रश्न आकृति:

उत्तर आकृतियाँ:

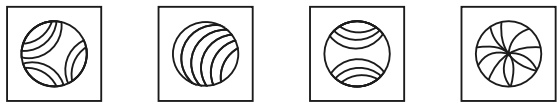

(a) (b) (c) (d)

9. प्रश्न आकृति:

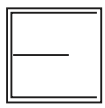

उत्तर आकृतियाँ:

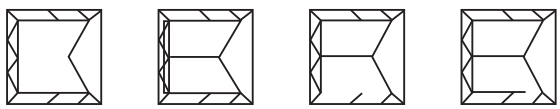

(a) (b) (c) (d)

10 EPFO प्रवर्तन अधिकारी और लेखाधिकारी परीक्षा-2017
(EPFO: Enforcement Officer/Account Officer Exam-2017)

परीक्षा तिथि : 26 फरवरी, 2017

भाग-A

1. Which one of the following is the **synonym** of the word written in capital letters in the sentence, "The **FUNDAMENTAL** character of an individual defines his entire life?"
   (a) Productive (b) Essential
   (c) Successful (d) Effective
2. Which one of the following is the **synonym** of the word written in capital letters in the sentence, "She has the habit of using **HACKNEYED** and redundant examples from her past even while dealing with the future generation"?
   (a) Indifferent (b) Imaginative
   (c) Cliched (d) Impressive
3. Which one of the following is the **synonym** of the word written in capital letters in the sentence, "She is an **IMMACULATE** soul whose presence makes all the difference"?
   (a) Spotless (b) Excited
   (c) Extraordinary (d) Unparalleled
4. Which one of the following is the **antonym** of the word written in capital letters in the sentence, "There is a great deal of **ENMITY**"?
   (a) Amity (b) Cooperation
   (c) Dispute (d) Hostility
5. Which one of the following is the **antonym** of the word written in capital letters in the sentence, "She was **RELUCTANT** to sell her car"?
   (a) Anxious (b) Happy
   (c) Eager (d) Unwilling
6. Which one of the following is the **antonym** of the word written in capital letters in the sentence, "I cannot comply with the **QUEER** regulations of your land"?
   (a) Strange (b) Nimble
   (c) Everyday (d) Customary
7. Which one of the following parts of the sentence, "As you know that the ignorant are easily duped", has an error?
   (a) As you know (b) that the ignorant
   (c) are easily duped (d) No error
8. Which one of the following parts of the sentence, "After a lot of argument I brought him forward to my point of view, has an error?
   (a) After a lot of argument (b) I brought him forward
   (c) to my point of view (d) No error
9. Which one of the following parts of the sentence, "Don't ask him how he is because if he starts talking about his health you'll never get off from him", has an error?
   (a) Don't ask him how he is because
   (b) If he starts talking about his health you"II never
   (c) get off from him (d) No error
10. Which one of the following words can be used as a substitute for the phrase, "A nursery where children of working parents are cared for while their parents are at work"?
    (a) Sculler (b) Crèche
    (c) Dormitory (d) Refectory
11. Which one of the following words can be used as a substitute for the phrase, "That which cannot be taken by force"?
    (a) Impossible (b) Improbable
    (c) Impeccable (d) Impregnable
12. Which one of the following is the appropriate question tag in the sentence, "Take a seat, _____"?
    (a) Shall you? (b) Can't you?
    (c) won't you? (d) Would you?
13. Which one of the following is the appropriate question tag in the sentence, "Anyone can make mistakes, _____"?
    (a) isn't it? (b) shall they?
    (c) can't they? (d) is it?
14. Which one of the following phrasal verbs may be used in the blank space in the sentence, "He is fond of art and seems _____ (suited) to be an artist"?
    (a) fit out (b) bring out
    (c) cut out (d) suit out
15. Which one of the following phrasal verbs may be used in the blank space in the sentence, "We were happy in the beginning, but now all the troubles have _____ (appeared)"?
    (a) cropped up (b) come about
    (c) come out (d) rushed in
16. Which one of the following phrasal verbs may be used in the blank space in the sentence, "No one knows how it all _____ (happened)"?
    (a) came across (b) came about
    (c) came into (d) came forward
17. Which one of the following phrasal verbs may be used in the blank space in the sentence, "I have to _____ (finish) this work before I leave tomorrow morning"?
    (a) clear up (b) clean up
    (c) finish up (d) do away with

EPFO: सहायक भविष्य निधि आयुक्त परीक्षा–2015
(EPFO: Assistant Provident Fund Commissioner Exam-2015)

परीक्षा तिथि–10 जनवरी, 2016

भाग–A

1. What is the indication out of the sentence: 'I gave him a piece of my mind'?
   (a) Appreciation
   (b) Warning
   (c) Greeting
   (d) Scolding
2. What is the meaning of the expression : 'Blue blood'?
   (a) Polluted industrial waste water
   (b) Sap of teak wood
   (c) An aristocrat
   (d) A costly object
3. 'He was hoist by his own petard' refers to
   (a) He had problems as a result of his own plans to hurt others
   (b) He was high up on the pole
   (c) He would usually run away from trouble
   (d) He was indifferent to his surroundings
4. What is a Ballad?
   (a) A novel
   (b) A historical narration
   (c) A popular story or folktale in verse
   (d) Musical comedy
5. Plagiarism means
   (a) There was an epidemic of plague in the area
   (b) It is a sort of political philosophy
   (c) It indicates a happy community spirit like in playing Holi
   (d) It is presenting the work of someone else as one's own
6. Rivalry between the two clans has become water under the bridge means
   (a) The rivalry continues
   (b) It has become a thing of the past
   (c) It connects the two clans
   (d) It is not forgotten
7. Consider the sentence:

   'The teacher gave me the book.'
   1 2 3 4 5 6

   where the words are numbered for convenience of reference. Consider also the insertion of a single word 'only' into this sentence to indicate a desired emphasis. Where shall this word be inserted if the emphasis is to be
   (i) On the recipient
   (ii) On the uniqueness of the item given
   (iii) On the giver

   Respectively (only one at a time)?
   (a) (i) Between 3 – 4; (ii) After 6; (iii) Between 2 – 3
   (b) (i) Between 3 – 4; (ii) Between 5 – 6; (iii) Before 1
   (c) (i) Between 4 – 5; (ii) Between 3 – 4; (iii) After 1
   (d) (i) Between 2 – 3; (ii) Between 4 – 5; (iii) Between 1 – 2
8. What is the meaning of the term 'didactic'?
   (a) Intended to be inspirational
   (b) Teaching a moral lesson
   (c) Received as comical
   (d) Sharing an informative experience
9. Consider the statement: 'The message of peace and brotherhood permeated the address by the Chief Guest.' Which of the following is meant by 'permeate' in this statement?
   (a) To advocate
   (b) To spread all over
   (c) To anchor and stabilize
   (d) To leave a premanent impression
10. Arrange the following to form a grammatically correct sentence:
    1. Einstein was
    2. although a great scientist
    3. weak in Arithmetic
    4. right from his school days

    Select the correct answer using the codes given below:
    (a) 4, 1, 3 and 2
    (b) 2, 1, 3 and 4
    (c) 4, 3, 1 and 2
    (d) 2, 3, 1 and 4

CHAT NOW

दृष्टि The Vision

1800-121-6260 011-47532596 Login Register

एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट | कक्षा कार्यक्रम | डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम
टेस्ट सीरीज़ | करेंट अफेयर्स | दृष्टि मीडिया

तैयारी का वह हिस्सा जो किताबों से पूरा नहीं हो सकता, उसके लिये हम आपको आमंत्रित करते हैं

अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com/hindi

तैयारी की रणनीति	मेन्स प्रैक्टिस प्रश्न	पी.सी.एस. परीक्षा की तैयारी
डेली न्यूज़ और एडिटोरियल (अंग्रेज़ी के प्रमुख समाचार पत्रों से)	राज्यसभा/लोकसभा टी.वी. डिबेट	पी.आर.एस. कैप्सूल्स
माइंड मैप	60 Steps to Prelims	टू द पॉइंट
फोरम	एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट	महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट्स की जिस्ट
डेली करेंट टेस्ट योजना, कुरुक्षेत्र सहित अन्य महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के टेस्ट	ब्लॉग	यू-ट्यूब चैनल

रोज़ाना एक घंटा इस वेबसाइट पर गुज़ारिये और प्रिलिम्स से इंटरव्यू तक की अपनी तैयारी को मज़बूत आधार प्रदान कीजिये।

For any query please contact:
87501 87501, 011-47532596

घर बैठे IAS/PCS की संपूर्ण तैयारी करने के लिये आपका स्वागत है

Drishti Learning App

पर

GET IT ON Google Play

अपने एंड्रॉयड फोन पर आज ही इंस्टॉल करें

ऐप की विशेषताएँ

- टीम दृष्टि द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाएँ एक ही मंच पर।
- ऑनलाइन, पेनड्राइव मोड में कक्षाएँ उपलब्ध।
- प्रिलिम्स और मेन्स की टेस्ट सीरीज़ भी ऐप के माध्यम से उपलब्ध।
- सभी पुस्तकें, मैगजीन, डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम के नोट्स देखने व मंगवाने की सुविधा।

ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

- घर बैठे देश के सर्वोत्कृष्ट अध्यापकों से पढ़ने की सुविधा।
- अब दिल्ली या किसी बड़े शहर जाकर पढ़ने की मजबूरी नहीं।
- IAS और PCS के कोर्स उपलब्ध।
- ऑनलाइन कोर्स करने के बाद, क्लासरूम कोर्स में प्रवेश लेने पर शुल्क में विशेष छूट।
- हर क्लास अपनी सुविधा से 3 बार देखने की सुविधा।
- उत्तर लिखकर चेक कराने तथा संदेह-समाधान की व्यवस्था भी शीघ्र उपलब्ध।
- कई विषयों के कोर्स ऑनलाइन और पेनड्राइव मोड में भी उपलब्ध।

दृष्टि आई.ए.एस. (दिल्ली शाखा) का पता
641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
8448485519, 87501 87501, 011-47532596

दृष्टि आई.ए.एस. (प्रयागराज शाखा) का पता
ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज
8448485518, 8750187501, 8929439702

दृष्टि आई.ए.एस. (राजस्थान शाखा) का पता
प्लॉट नंबर-45 व 45-A, हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर राजस्थान-302018
8448485518, 8750187501, 8929439702

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

641, 1st Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9
Ph.: 011-47532596, 87501 87501
Website: www.drishtiias.com
E-mail: booksteam@groupdrishti.com

ISBN 978-93-90955-64-0
9 789390 955640
मूल्य : ₹ 330